ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 2021
Innovation The Research Concept

होमरूल आन्दोलन - एक विवेचनात्मक अध्ययन (मध्यप्रान्त के विशेष संदर्भ में)

Home Rule Movement - A Critical Study (With Special Reference to Madhya Pradesh)

Paper Submission: 14/09/2021, Date of Acceptance: 24/09/2021, Date of Publication: 25/09/2021

लक्ष्मण उईके
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
सशिकीय कला एवं
वाणिज्य महाविद्यालय,
मझौली, सीधी, म.प्र.
भारत

सारांश

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में होमरूल आन्दोलन का विशेष महत्व है। इस आन्दोलन के प्रणेता श्रीमती ऐनी बीसेंट तथा लोकमान्य तिलक थे। 1914 तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन बिल्कुल निष्क्रिय हो चुका था। उसे पुनः सक्रिय करने हेतु तिलक 28 अप्रैल 1916 को पूना में इंडियन होमरूल लीग तथा सितम्बर 1916 को श्रीमती ऐनी बीसेंट ने मद्रास में अखिल भारतीय होमरूल लीग की स्थापना की। दोनों नेता द्वारा अपने-अपने तरीकों से आन्दोलन का खूब प्रचार-प्रसार किया गया। दोनों नेता मध्यप्रान्त भी आये। उनके ओजस्वी भाषण ने जनता पर चमत्कारी प्रभाव डाला। ब्रिटिश नेताओं द्वारा दोनों नेताओं के प्रभाव को नियंत्रित कर राजनीतिक जागृति को राकने के लिये दमनात्मक कार्यवाहियाँ की गई। परंतु आन्दोलन को जितना ही दमनचक्र से रोंदने का प्रयास किया गया उतना ही यह आन्दोलन उग्र होता चला गया।

होमरूल आन्दोलन के प्रभाव अथवा परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। आन्दोलन द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद के अखिल भारतीय स्वरूप की दिशा में विशेष प्रयास किये गये। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक नई शक्ति व चेतना का संचार हुआ। आंदोलन को सफल बनाने हेतु जन-साधारण ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इसके फलस्वरूप युवा देशभक्तों की एक नई पीढ़ी स्थापित हो गई। होमरूल लीग के प्रभाव से सारा देश एकता के सूत्र में बंध गया। आन्दोलन की व्यापकता को देख ब्रिटिश सरकार को षीघ्र ही आन्दोलन के उद्देश्यनुरूप नवीन नीति निर्धारण के लिये बाध्य होना पड़ा। सन् 1919 के अधिनियम द्वारा भारतीयों को जो आंषिक स्वायत्तता दी गई उसका श्रेय होमरूल आन्दोलन को ही जाता है।

The Home Rule Movement has a special significance in the history of the Indian National Movement. The leaders of this movement were Mrs. Annie Besant and Lokmanya Tilak. By 1914, the Indian national movement had become completely inactive. To reactivate it, Tilak founded the Indian Home Rule League in Poona on 28 April 1916 and the All India Home Rule League in Madras on September 1916 by Mrs. The movement was widely publicized by both the leaders in their own ways. Both the leaders also came to Madhya Pradesh. His eloquent speeches made a miraculous effect on the public. By controlling the influence of both the leaders, repressive actions were taken by the British leaders to stop the political awakening. But the more efforts were made to crush the movement with the wheel of repression, the more this movement became violent.

The effects or results of the Home Rule Movement proved to be very important. Special efforts were made by the movement towards an all-India form of Indian nationalism. A new power and consciousness was infused in the Indian National Congress. The general public took part enthusiastically to make the movement a success. As a result, a new generation of young patriots was established. With the effect of the Home Rule League, the whole country was united in the thread of unity. Seeing the enormity of the movement, the British government was soon compelled to formulate a new policy as per the objectives of the movement. The partial autonomy given to Indians by the Act of 1919 goes to the Home Rule Movement itself.

मुख्य शब्दः होमरूल, लोकमान्य तिलक, ऐनी बेसेंट, स्वशासन, औपनिवेषिक आदि।

Keywords: Home Rule, Lokmanya Tilak, Annie Besant, Self-Government, Colonial Etc.

प्रस्तावना

प्रथम विश्व युद्ध अर्थात् 1914 ई. तक राष्ट्रीय आंदोलन पूर्णतः शिथिल हो चुका था। वह गिरावट के निम्नतम स्तर पर पहुँच गया था। राष्ट्रीय आंदोलन में नवजीवन का संचार करने हेतु श्रीमती ऐनी बीसेंट तथा लोकमान्य तिलक ने होमरूल आन्दोलन का सूत्रपात किया। यह आन्दोलन एक षांतिपूर्ण वैचारिक आन्दोलन था जिसका उद्देश्य ब्रिटिश षासन से भारत के लिये स्वशसन प्राप्त करना था। अपने इस उद्देश्य प्राप्ति के लिए लोकमान्य तिलक ने 28 अप्रैल 1916

को पूना में इंडियन होमरूल लीग की स्थापना की और श्रीमती बीसट ने 15 सितम्बर 1916 को मद्रास के निकट अडयार में ''अखिल भारतीय होमरूल लीग'' की स्थापना की। आन्दोलन के प्रचार-प्रसार हेतु तिलक ने अपना कार्यक्षेत्र कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा मध्यप्रान्त व बरार निष्चित किया और देश का बाकी भाग बीसेंट का कार्यक्षेत्र बना। तिलक और एनी बीसेण्ट दोनों ने अपने-अपने तरीकों से होमरूल आन्दोलन का खूब प्रसार किया। उन्होंने अपने कार्यक्षेत्रों में तूफानी दौरे किये। तिलक के ओजस्वी भाषणों से क्षेत्र के जनमानस पर व्यापक प्रभाव पड़ा। मध्यप्रांत एवं बरार में भी राष्ट्रीय जनजागृति का संचार होने लगा। इसी कारणवष होमरूल लीग के सदस्यों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि दर्ज की गई। 1917 तक होमरूल लीग की लोकप्रियता चरम पर पहुँच गई।

अध्ययन का उद्देश्य

1. होमरुल आंदोलन का महत्व स्पष्ट करना।
2. होमरूल आंदोलन का मध्य प्रान्त पर प्रभाव स्पष्ट करना।

मध्यप्रान्त में होमरूल आन्दोलन

औपनिवेषिक भारत के अन्तर्गत नवम्बर 1861 में मध्यप्रांत का गठन किया गया। इसकी राजधानी नागपुर थी। मध्यप्रान्त के अंतर्गत नागपुर क्षेत्र के नागपुर, चांदा, भण्डारा, छिन्दवाड़ा, रायपुर (छत्तीसगढ़) बस्तर तथा कुरोंदा के अधीनस्थ प्रदेशों सहित सागर-नर्मदा राज्य क्षेत्र के सागर, दमोह, जबलपुर, मण्डला, सिवनी, बैतूल, नरसिंहपुर और होशगाबाद जिले शामिल थे।

होमरूल आन्दोलन के संस्थापक श्रीमति ऐनी बीसेंट तथा बाल गंगाधर तिलक आन्दोलन के प्रचारार्थ मध्यप्रान्त का भी दौरा किया। होमरूल लीग की षाखायें देश के विभिन्न प्रान्तों की तरह मध्यप्रांत में भी खोली गई।1 अक्टूबर 1915 को ऐनी बीसेंट नागपुर आई और उन्होंने एक सार्वजनिक सभा में होमरूल लीग स्थापित करने की योजना प्रस्तुत की। उनके सिध्दांतों को व्यापक समर्थन मिला। 28 अप्रैल 1916 को होमरूल लीग की स्थापना हुई जिसका उद्देश्य संवैधानिक साधनों द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत स्वशासन प्राप्त करना था। कांग्रेस ने सन् 1916 के अधिवेशन के पष्चात् होमरूल आन्दोलन को गति प्राप्त हुई। 3 जनवरी 1917 को हुगली के किनारे उन्होंने अपनी मांग की घोषणा की, 5 फरवरी को तिलक कलकत्ता से सीधे नागपुर आये। अगले दिन एक विषाल सार्वजनिक सभा हुई जिसमें लोकमान्य ने होमरूल लीग की स्थापना के लिये जनता का आव्हान किया फलस्वरूप अनेक स्थानों पर इसकी षाखाएँ स्थापित हुई। शासन द्वारा तिलक के पंजाब प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया साथ ही मद्रास में ऐनी बीसेंट को दो साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया।[2] इसका परिणाम आन्दोलन की लोकप्रियता में बढ़ोत्तरी ही थी। देश के सारे नेता इस आन्दोलन में सम्मिलित हुये।

इस समय की एक और उल्लेखनीय घटना कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच 1916 में सम्पन्न लखनऊ समझौता था जिसके द्वारा मुसलमानों ने स्वराज के लक्ष्य को स्वीकार कर लिया एवं हिन्दुओं ने मुसलमानों के हितों की रक्षा का आष्वासन देते हुए साम्प्रदायिक निर्वाचन को।[3] इस प्रकार 1916 तक देश में एक संयुक्त मोर्चा खड़ा हो गया जिसमें कांग्रेस के उदारपंथी एवं उग्रपंथियों के साथ ही साथ हिन्दु-मुस्लिम भी एक ही मंच पर आ गए थे और उनकी एक ही मांग थी और वह था स्वराज्य।

मध्यप्रांत पर भी इस होमरूल आन्दोलन का तीव्र प्रभाव पड़ा एवं 1916 में ही एक प्रांतीय संघ बनाया गया जिसके अध्यक्ष हरीसिंह गौर एवं मंत्री डॉ. मुंजे थे एवं राज्य के प्रत्येक जिले से प्रतिनिधित्व करने वाले सदस्य सम्मिलित थे। छत्तीसगढ़ से रविशंकर षुक्ल, राघवेन्द्रराव, एस.बी. ताम्बे के साथ हरीसिंह गौर, राय बहादुर चैधरी आदि प्रमुख थे। इसका प्रमुख कार्यालय नागपुर में था और इसकी शाखाएँ समस्त प्रान्त में फैली थी।[4] इस आन्दोलन में अलीबन्धु भी जिन्हें छिन्दवाड़ा में नजरबंद रखा गया था, शामिल हो गए फलतः छिन्दवाड़ा में भी होमरूल लीग की स्थापना हुई। लोगों ने स्वदेशी का प्रचार किया और विदेशी कपड़ों की होली जलाई। अलीबंधुओं से मिलने देश के बड़े-बड़े नेतागण छिन्दवाड़ा आने लगे। फलतः छिन्दवाड़ा में भी राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति उत्साह का वातावरण निर्मित हो गया। जिसके संदर्भ में छिन्दवाड़ा जिले के प्रमुख स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अर्जुन सिंह सिसोदिया लिखते हैं कि छिन्दवाड़ा जिले का जोष उस समय अपनी चरम सीमा में था और चहुँओर उत्साह ही उत्साह नजर आता था।5 मण्डला जिले में रावसाहब केकरे (वकील) अध्यक्षता में होमरूल लीग की स्थापना की गई।6 इसी प्रकार 1917 में बैतूल में भी लीग की स्थापना की हुई।7

मध्यप्रान्त में होमरूल आन्दोलन के प्रचार-प्रसार में खापरडे के साथ ही डॉ. मुंजे और माधव श्रीधर अणे भी जुटे रहे। श्री अणे 1916 से 1919 के बीच पष्चिम भारत के होमरूल लीग के उपसभापति रहे तथा यवतमाल के होमरूल लीग के प्रथम अध्यक्ष थे। होमरूल लीग की स्थानीय षाखाएँ कई स्थानों पर स्थापित हुई एवं उनकी सभाएँ भी हुई।8 बरार के राष्ट्रवादी अणे के नेतृत्व में जनता में राजनैतिक सुधारों हेतु प्रचार कार्य कर रहे थे। हितवाद ने अपने 3 दिसम्बर, 1916 के अंक में लिखा कि इस प्रचार कार्य को सुसंगठित एवं उत्तरदायी ढंग से चलाने के लिये अब जिला,

ताल्लुका एवं ग्रामीण कांग्रेस समितियों एवं होमरूल लीग की शाखा को स्थापित करने का निष्चय किया गया है।9

विद्यार्थी वर्ग में भी इस आन्दोलन के प्रति अत्यधिक उत्साह था एवं वे राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत थे फलतः शासकीय भय की उपेक्षा कर वे प्रदर्शनों एवं सार्वजनिक सभाओं में सम्मिलित हुए एवं षालाओं से निष्कासित भी किए गए। तिलक जब जबलपुर पहुँचे तो जनता एवं विद्यार्थियों ने उनका जोरदार स्वागत किया। उनका जुलूस निकाला गया एवं विशाल सभा आयोजित की गई।10 जिसमें षासकीय प्रतिबंधों के बावजूद हजारों विद्यार्थी उपस्थित थे। समितियों एवं होमरूल लीग की शाखा को स्थापित करने का निष्चय किया गया है।

प्रांत का महाकौशल क्षेत्र यद्यपि नागपुर एवं बरार के समान राजनैतिक दृष्टि से उतना जागरूक एवं उग्र नहीं था। परंतु फिर भी राष्ट्रीय चेतना धीरे-धीरे जागृत हो रही थी। इस क्षेत्र में भूमिपतियों की संख्या अधिक होने के कारण डिस्ट्रिक्ट एसोसिएशनों की स्थापना पहले हुई एवं अपने हितों की रक्षा हेतु संघटित होना प्रारम्भ हुआ जिनमें धीरे-धीरे नेतृत्व में मध्यप्रांत और बरार प्रांतीय सम्मेलन का संगठन किया गया11 जिसका उद्देश्य मौलिक एवं राजनैतिक जागरूकता की गति को बढ़ाना था।

छत्तीसगढ़ में राजनैतिक सक्रियता के प्रमुख रूप से दो केन्द्र थे- रायपुर और बिलासपुर। इन क्षेत्रों में मॉर्ले-मिण्टों सुधारों का आधार पर जिला परिषदों एवं नगर पालिकाओं के गठन हेतु मांग अधिक प्रबल थी, जिससे यहाँ के प्रबुध्दजनों को राजनैतिक गतिविधियों में संलग्न होने का अवसर मिल सके। यही कारण था कि जब रायपुर में प्रांतीय सम्मेलन हुआ तो उसमें स्पष्ट कहा गया कि जनता को तब तक संतोष नहीं होगा जब तक कि स्थानीय स्वषासन संबंधी कंाग्रेस की मांग पूरी न हो।12 इतना ही नहीं इस क्षेत्र के विद्यार्थी भी चैतन्य एवं उत्साही थे। जैसा कि 24 नवंबर 1917 के हितवाद के पूरक प्रतिक में रायपुर नोट्स में बताया गया कि रायपुर के विद्यार्थियो की हड़ताल के समाचार से अत्यधिक उत्तेजित थे। यद्यपि उनको स्पष्टतः ज्ञात नहीं था कि शासकीय आदेश क्या है पर उनको यही लग रहा था कि वे लोग स्वतंत्रता के एक देश भक्तिपूर्ण युद्ध में संघर्षरत हैं।13 इस प्रकार राजनैतिक रूप से चैतन्य एवं अधिकारों की मांग के प्रति सजग छत्तीसगढ़ में राजनैतिक आन्दोलन तीव्र होता जा रहा था। जिसका नेतृत्व कर रहे थे बिलासपुर के ई. राघवेन्द्रराव एवं रायपुर के रविशंकर शुक्ल।

विश्वयुद्ध अपनी चरम सीमा पर था और वहीं दूसरी ओर भारत में होमरूल आन्दोलन अपनी पूर्ण शक्ति एवं उत्साह से देश के अन्दर चल रहा था। इन परिस्थितियों में भारत मन्त्री मांटेग्यू ने 20 अगस्त 1917 का अपनी सुप्रसिध्द घोषणा सुनाई जिसके अनुसार यह कहा गया कि ब्रिटिश सरकार की नीति का लक्ष्य प्रषासन की प्रत्येक शाखा में भारतीयो के सहयोग की निरन्तर वृद्धि एवं स्वशासित संस्थाओं का क्रमिक विकास इस दृष्टिकोण से करना है जिससे की ब्रिटिश साम्राज्य के अंग के रूप में भारत क्रमषः उत्तरदायित्व पूर्ण शासन को प्राप्त कर सके।14

अधिवेशन के पष्चात् तिलक ने मध्य प्रदेश का व्यापक दौरा किया और होमरूल लीग के उधेश्यो पर भाषण दिया तथा इस लीग हेतु राशि एकत्र की। इस दौरान तिलक दो बार पहले अक्टूबर 1916 एवं पुनः अक्टूबर 1917 को जबलपुर आए एवं यहाँ प्रभावषाली भाषण दिया जिसका जनता पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। जबलपुर में ही 1916 में होमरूल लीग की स्थापना हो चुकी थी। भारत रक्षा अधिनियम के तहत 1918 का वर्ष तनाव का वर्ष था, क्यांेकि तिलक तथा विपिन चन्द्र पाल को पंजाब में प्रवेश की अनुमति नहीं थी, इसके विरोध में नागपुर वर्धा, जबलपुर एवं रायपुर में सभाएँ एवं प्रांतीय सम्मेलन भी हुआ।15 इस सम्मेलन में यह प्रस्ताव स्वीकृत किया गया कि जब तक सरकार होमरूल स्वराज्य देने को तैयार नहीं हो जाती युद्ध में सहयोग करना कठिन होगा।16 इस समय तक जिला राजनीतिक सम्मेलन व्यापक एवं नियमित रूप से होने लगे थे जिसके फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में भी राजनीतिक जागृति आने लगी थी। ये सम्मेलन छिन्दवाड़ा, बालाघाट, अमरावती, चारा, दमोह और सागर में आयोजित हुए थे। इस सम्मेलनों ने लोगों को राजनीतिक चेतना एवं स्फूर्ति देने के साथ ही साथ राजनीतिक संघर्ष को मध्यम वर्ग से साधारण जनता के आंदोलन में परिणित करने में सहायक हुआ।17 मई 1918 में वर्धा, यवतमाल एवं धमतरी जैसे स्थानों में सभाएँ हुई और स्वराज्य तथा राष्ट्रीय शिक्षा के माँग के प्रस्ताव पारित हुए।

दूसरी ओर सरकार का दमनचक्र भारत प्रतिरक्षा अधिनियम पर चलता रहा जिसमें से अनेक मुकदमें ऐसे थे जिनमें कोई सत्य नहीं था, परंतु भारतीय जनता के मनोबल को तोड़ने की जगह उसने उनके विरोध की भावना को ही बढ़ाया। उदाहरण के लिये दमोह के भैयालाल चैधरी का मामला हो जिसे शासन सिद्ध नहीं कर सकी या श्री नारायण राव वैद्य का जिनका अपराध श्रमिक दलों में भर्ती के खिलाफ, यह कहना था कि हम युद्ध करने और मरने को तैयार हैं, किंतु कुली नहीं बनना चाहते। चितरंजनदास ने न्यायिक आयोग के समक्ष उनके मामले पर तीन दिनों तक बहस की और उन्हें अधीनस्थ अदालत द्वारा प्रदत्त 18 माह के सश्रम कारादण्ड से मुक्त कराया।

8 जुलाई 1917 को भारत मंत्री माण्टेग्यु की सुधार योजना की घोषणा प्रकाशित हुई। भारत का एक वर्ग सुधारों से संतुष्ट था। श्रीमती बीसेण्ट ने भी सुधारों को पर्याप्त बताया और वे आन्दोलन से पृथक हो गई। 1918 में तिलक अपने मानहानि के मुकदमें की पैरवी करने इंग्लैण्ड चले गए। 1920 में तिलक की मृत्यु के बाद आन्दोलन समाप्त हो गया।

निष्कर्ष

भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन को पुनर्जीवित करने तथा स्वशासन स्थापना की दिशा में होमरूल आन्दोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आन्दोलन के सूत्रधार लोकमान्य तिलक ने बम्बई, कर्नाटक मध्यप्रान्त एवं बरार में होमरूल आन्दोलन द्वारा जनता में राष्ट्रीय चेतना विकसित की। श्रीमती ऐनी बीसेण्ट ने बंगाल, मद्रास एवं संयुक्त प्रान्त में जनता को राजनीतिक रूप से शिक्षित किया। यह एक शांतिपूर्ण चलने वाला वैधानिक आन्दोलन था जिसने ब्रिटिश सरकार को एक सशक्त चुनौती दी। आन्दोलन को दबाने के लिये ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक कार्यवाहियां की। श्रीमती ऐनी बीसेण्ट और तिलक को गिरफ्तार कर लिया गया तथा उनके मध्यप्रान्त प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इसके बावजूद यह आन्दोलन लोकप्रियता की चरम सीमा तक पहुँच गया। होमरूल आन्दोलन ने युवा देशभक्तों की एक नवीन पीढ़ी स्थापित की। इस प्रकार से होमरूल आन्दोलन ने आजादी के भावी जन-आन्दोलनों की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *शर्मा, जे.पी. - "मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में: 1920-1947" 1989 पृ. 42*
2. *ताराचंद, हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इण्डिया, खण्ड 3, 1992, पृ. 450 शुक्ल , आर.एल. (सं.) आधुनिक भारत का इतिहास, स्वतंत्रता प्राप्ति और द्वेश विभाजन तक, 2003 पृ. 700.01*
3. *मिश्रा, डी.पी. (सं.) - मध्य प्रदेश के स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास, पृ. 287 सक्सेना, सुधीर - मध्य प्रदेश में आजादी की लड़ाई और आदिवासी 1999 पृ. 193 अग्रवाल, गिरिजाशंकर, स्वाधीनता संग्राम मण्डला-डिण्डौरी, पृ. 96 षुक्ल, प्रयागदत्त, क्रांति के चरण, पृ. 130 होम पॉलिटिकल, फोर्ट नाइटली रिपोर्ट और द पॉलिटिकल सिचुएशन इन द सी.पी. एण्ड बरार सेकेण्ड हॉफ ऑफ अक्टूबर 1916 द हितवाद दिसम्बर 1916 पृ*
4. *रामेन्द्र तिवारी, स्वतंत्रता संग्राम की झलक जबलपुर के झरोखे से 2001*
5. *द हितवाद 8 अप्रैल 1916, पृ. 7*
6. *द हितवाद 1 अप्रैल 1918, पृ. 6*
7. *द हितवाद पूरक प्रति 24 अक्टूबर 1917*
8. *ताराचन्द, वही, पृ. 463*
9. *पं. रामेन्द्र तिवारी, वही, पृ. 8*
10. *मिश्र, रामेन्द्र नाथ लक्ष्मीधर झा छत्तीसगढ़ का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास 1998 पृ. 131*
11. *डी.पी. मिश्रा (सं.), वही, पृ. 297*